E-ISSN: 2583-9667
Indexed Journal
Peer Reviewed Journal
https://multiresearchjournal.theviews.in

Received: 20-08-2024
Accepted: 29-09-2024

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCE RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY

Volume 2; Issue 4; 2024; Page No. 138-142

21वीं सदी के संदर्भ में प्रेमचंद के सामाजिक और आर्थिक विचारो का अध्ययन

[1]Mamta Rani and [2]Dr. Aman Ahmad

[1]Research Scholar, Department of Hindi, Monad University, Kasmabad, Uttar Pradesh, India
[2]Assistant Professor, Department of Hindi, Monad University, Kasmabad, Uttar Pradesh, India

Corresponding Author: Mamta Rani

सारांश

प्रेमचन्द के पात्र भारतीय जनता की सांस्कृतिक विशेषताओं को रखते हुए सच्चे भारतीय हैं, तो दूसरी ओर साधारण मानवीय भावनाओं से परिपूर्ण मानव भी हैं। पारस्परिक सहानुभूति, ईर्ष्या, द्वेष, प्रेम आदि मानव–मात्र के चिरन्तन गुणों से युक्त उनके पात्र कभी–कभी विश्व–उपन्यासकारों के उत्कृष्ट पात्रों के समान सार्वलौकिक बन जाते हैं। 'गोदान' के पात्रा सचमुच सजीव मनुष्य हैं।प्रेमचन्द ने विधवा समस्या का चित्रण प्रतिज्ञा, प्रेमाश्रम और वरदान उपन्यास में किया है। उपन्यास, द्वारा और बड़े, को एक राष्ट्र की कल्पनाशील कहानी के रूप में या एक समाज के मूल मूल्यों के गद्य महाकाव्य के रूप में माना जाता है। ये मूल्य एक विशेष उम्र के पुरुषों और महिलाओं के आंतरिक संघर्ष को दर्शाते हैं और सामाजिक–आर्थिक नेटवर्क की खींचतान और धक्का उन्हें वैधता और महत्व देते हैं। व्यक्तियों द्वारा अनुभव की गई बोलियां रचनात्मक लेखक को कच्चा माल प्रदान करती हैं जो कल्पना की सहायता से इस सामान को कल्पना के काम में बदल देता है। साहित्यिक विधा के रूप में उपन्यास भारत के लिए नया है। एक शैली के रूप में यह प्रेमचंद के हाथों में और समृद्ध हुआ, जिसने इसे लोगों का मनोरंजन करने और समाज की विषम शक्ति संरचनाओं की आलोचना करने के लिए एक लोकप्रिय माध्यम बना दिया। यह भारत में मध्यम वर्ग के उद्भव के साथ हुआ, जो भारत में ब्रिटिश वाणिज्यिक और नौकरशाही हितों के सक्रिय एजेंटों के रूप में सेवा कर रहा था। प्रेमचंद ने उपन्यास की शैली को मनुष्य और समाज में आमूल–चूल परिवर्तन का माध्यम बनाया। यह सुधारवादी उत्साह नहीं है, लेकिन अपने दिनों के समाज के दलित या उप–वंचितों के लिए एक गंभीर चिंता है जो प्रेमचंद को एक प्रसिद्ध लेखक बनाती है। इसमें कोई शक नहीं, प्रेमचंद की उम्र की समस्याएं उनके पूर्ववर्तियों की तुलना में अलग और अधिक जटिल थीं। लेकिन प्रेमचंद न केवल सामाजिक संदर्भ और परिवेश में किसी व्यक्ति के अस्तित्व और मूल्य को स्वीकार करते हैं बल्कि वे यथार्थवादी चित्रण और समस्याओं के विश्लेषण में भी विश्वास करते हैं। एक लेखक के रूप में उनका उद्देश्य समाज की बेहतरी है। इस अर्थ में प्रेमचंद का सामाजिक यथार्थवाद उनकी उम्र के किसी भी अन्य लेखक की तुलना में अधिक सकारात्मक और प्रगतिशील है।

मूल शब्दः सांस्कृतिक, उपन्यास, यथार्थवादी, सामाजिक, आर्थिक

1. प्रस्तावना

आज हमारे साहित्य में उपन्यास को, जो सबसे अधिक जनतंत्राीय साहित्यिक विधा है, वह स्थान प्राप्त नहीं हुआ है जो उसे प्राप्त होना चाहिए। उपन्यास सबसे अधिक लोकप्रिय साहित्य–विधा है।उपन्यास मनुष्य के सामाजिक, वैयक्तिक अथवा दोनों प्रकार के जीवन का रोचक साहित्यिक प्रतिरूप है, जो प्रायः एक कथा–सूत्र के आधार पर निर्मित होता है। सामाजिक एवं वैयक्तिक जीवन उपन्यास के विषय हैं। इनमें किसी एक को अथवा दोनों को उपन्यास का मुख्य आधार बनाया जा सकता है। वैसे व्यक्ति और समाज परस्पर अच्छेद्य बन्धनों से बंधे होते हैं। अतः साहित्य में भी उनको सम्बद्ध ही रखना पड़ता है। प्रत्येक उपन्यास में व्यक्ति और समाज का अध्ययन न्यूनाधिक मात्रा में आ ही जाता है। किन्तु आज इनमें किसी एक को मुख्य विषय बनाकर उपन्यास लिखे जाने लगे हैं। उपन्यास में प्रतिपादित जीवन चाहे सामाजिक हो चाहे वैयक्तिक, वह सामान्य या विशेष–विशाल या सीमित–हो सकता है। जीवन के विविध अंगों का निरीक्षण कर उसका समग्र रूप उपस्थित करने वाले कतिपय बृहत्काय उपन्यास हमें विश्व–साहित्य ने प्रदान किये हैं। दूसरी ओर ऐसे उपन्यास भी हैं, जिनमें सामाजिक जीवन की दो–एक समस्या का, अथवा व्यक्ति के किसी विशेष मनोव्यापार का विश्लेषण किया जाता है। प्रथम श्रेणी के उपन्यासों का क्षेत्र अधिक विशाल होता है, तो दूसरी श्रेणी के उपन्यासों में, क्षेत्रा के सीमित होने पर भी, अगाध अध्ययन होता है।

प्रेमचंद बीसवीं शताब्दी के भारत के एक बहुत प्रसिद्ध उर्दू और हिंदी लेखक हैं। प्रेमचंद का जीवन इतिहास किसी भी सामान्य व्यक्ति की तरह है। लेकिन जो चीज उन्हें खड़ा करती है, वह उनके जीवनकाल में रचित कई कार्य हैं। उन्हें अभी भी बहुत उत्साह और प्रशंसा के साथ पढ़ा जाता है। हालाँकि उनके जीवन में आर्थिक तंगी थी, लेकिन उनके पास उनकी रचनाओं और रचनाओं का समृद्ध संग्रह था। आधुनिक हिंदी और उर्दू

सामाजिक कथाओं के अग्रणी, मुंशी प्रेमचंद का वास्तविक नाम धनपत राय था। उन्होंने लगभग 300 कहानियाँ और उपन्यास लिखे। उनके सबसे प्रसिद्ध उपन्यास हैंरू सेवासदन, रंगमंच, गबन, निर्मला और गोदान। प्रेमचंद की अधिकांश सर्वश्रेष्ठ रचनाएँ उनकी 250 या इतनी छोटी कहानियों के बीच पाई जानी हैं, जिन्हें मानसरोवर शीर्षक के तहत हिंदी में संग्रहित किया गया है। उनके तीन उपन्यास फिल्मों में बनाए गए हैं। प्रेमचंद का साहित्यिक जीवन उर्दू में एक फ्रीलांसर के रूप में शुरू हुआ। 20 वीं सदी के हिंदी और उर्दू साहित्य के एक प्रसिद्ध लेखक, प्रेमचंद को भारत के टॉल्स्टॉय के रूप में भी जाना जाता है। उनके साहित्यिक आउटपुट में तीन सौ से अधिक लघु कथाएँ और कई उपन्यास शामिल हैं जहाँ मुख्य रू‍ से आम आदमी के जीवन के चित्रण पर ध्यान केंद्रित किया गया है। वास्तव में, प्रेमचंद को एक साहित्यिक शैली के रूप में उपन्यास के आकार के लिए एक महत्वपूर्ण भारतीय साहित्यकार माना जाता है। उन्हें प्रगतिशील लेखन के संस्थापक के रूप में भी जाना जाता है जिसने भारतीय साहित्य में एक नए युग को चिह्नित किया। ऑस्ट्रेलियाई मूल के लेखक जैक लिंडसे का कहना है कि यह प्रेमचंद की भावुक सहानुभूति है, लोगों की पीड़ा के प्रति उनकी निकटता और तत्काल ऐतिहासिक मुद्दे की उनकी भावना है जिसने उन्हें हिंसा के विविध रूपों से जूझ रहे मानवता के यथार्थवादी चित्रण की शुरुआत की। वास्तव में, प्रेमचंद की साहित्यिक रचनाएँ, निर्मला और गोदान को छोड़कर, आदर्शवाद से भरे मोहनदास के। गांधी के विचारों से बहुत प्रभावित हैं। डॉ। कमलकिशोर गोयंका ने बतायारू प्रेमचंद की साहित्यिक रचनाओं पर महात्मा गांधी और मार्क्स का प्रभाव एक बार में देखा जा सकता है।

2. अध्ययन का महत्व

21वीं सदी में आज हर व्यक्ति किसी न किसी समस्या से घिरा हुआ है। अपनी इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए वह भागा–दौड़ी का जीवन जीने के लिए बाध्य है। आज वह तकनीकी युग में जी रहा है उतना ही नैतिकता और मूल्यों से दूर हो रहा है। आज व्यक्ति को अपने करीबी और रिश्तेदारों से मिलने का समय नहीं है। हमारे देश ने भले ही कितनी ही तरक्की कर ली है लेकिन आज भी हमें अपने आसपास अनेक सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक, साम्प्रदायिक और नैतिक समस्याएँ देखने को मिल जाएगी। प्रेमचन्द जी के उपन्यासों में मानव जीवन से जुड़ी सभी समस्याओं का वर्णन हमें देखने को मिलता है। वे उन समस्याओं के मूल कारण से लोगों को अवगत कराते है और उनका समाधान भी बताते है। जरूरत है 21वीं सदी के हर नागरिक को जागरूक होने की। उनके उपन्यास हर वर्ग का मार्गदर्शन करते है। हर वर्ग आज इस भागा दौड़ी के जीवन में अपनी समसयाओं का हल–ढूँढना चाहता है। इसके लिए वे बाबाओं के चक्कर काटते है। यदि वे प्रेमचन्द के उपन्यासों को पढ़ ले तो उन्हें अपनी सभी समस्याओं का हल उनके उपन्यासों में मिल जाएगे। हर वर्ग को उनके उपन्यासों का अध्ययन अवश्य करना चाहिए।

3. साहित्य की समीक्षा

राठौड़, जसवंत. (2022). उत्तर–आधुनिक दुनिया में सामाजिक–सांस्कृतिक और राजनीतिक तनावों के मूल कारणों में से एक दुनिया भर में व्याप्त असमानता है. मनुष्यों की यह असमानता केवल उनके आर्थिक और वित्तीय विकास तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह उनके सामाजिक–सांस्कृतिक और धार्मिक व्यवहार में भी स्पष्ट है और यह उनके व्यवहार में भी स्पष्ट है. इसके अलावा, यहाँ यह बताना महत्वपूर्ण है कि यह असमानता मानव दुनिया में प्रागैतिहासिक काल से मौजूद है और इसने स्पष्ट रूप से मनुष्यों के बीच दो ध्रुवों का निर्माण किया हैः शक्तिशाली और शक्तिहीन. कई समाजशास्त्री, अर्थशास्त्री और साहित्यिक विद्वान इस द्वंद्व को संघर्ष, तनाव, विद्रोह और युद्धों के निर्माण के लिए जिम्मेदार मानते हैं. वर्तमान शोध पत्र दो खंडों में विभाजित है. पहला खंड 'सबाल्टर्न' और 'सबाल्टर्निटी' शब्दों से जुड़ी विभिन्न परिभाषाओं और मुद्दों से संबंधित है. मुंशी प्रेमचंद के चुनिंदा उपन्यासों में सबाल्टर्न की धारणाओं को शामिल करते हुए दूसरे खंड में आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। प्रेमचंद के उपन्यासोंः निर्मला, रंगभूमि और गोदान में चित्रित सबाल्टर्न (महिला, अछूत और किसान) के तीन प्रकारों की जांच करते हुए सत्ता, अंतर्संबंध, विचारधारा, पदानुक्रम आदि के संबंध में सबाल्टर्निटी की अवधारणाओं और धारणाओं पर चर्चा करने का प्रयास किया गया है।

सिंह, शैलेंद्र। (2022)।यह पुस्तक प्रेमचंद के साहित्यिक कार्यों के संबंध में अनुरूपता और प्रतिरोध के प्रश्नों की जांच करती है। अंतर्युद्ध भारत की विभिन्न जटिलताओं, चुनौतियों और विरोधाभासों का मानचित्रण करते हुए, यह दर्शाता है कि कैसे प्रेमचंद के उपन्यासों के निष्क्रिय किसान नायक अपने असंतुष्ट राष्ट्रवादी समकक्षों की तुलना में धर्म या नैतिक कर्तव्य की एक बिल्कुल विपरीत परिभाषा का समर्थन करते हैं। तुलनात्मक मूल्यांकन के अपेक्षाकृत समान तर्क के माध्यम से, यह प्रेमचंद के साहित्यिक प्रतिनिधित्वों के बीच मौजूद मौलिक विषमता को और भी सामने लाता है, जिसमें महिलाओं को आज्ञाकारी घरेलू विषयों के रूप में और उन्हें औपनिवेशिक उत्तर भारत के विद्रोही देशभक्तों के रूप में चित्रित किया गया है। यह पुस्तक उपन्यास, लघु कथाएँ, पत्र और पत्रकारीय लेखन सहित कई विधाओं को एक साथ रखती है, जो उर्दू–हिंदी साहित्य के सबसे अधिक संकलित और जांचे गए लेखकों में से एक पर एक आकर्षक पुनर्विचार प्रस्तुत करती है। ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण तथा व्यापक अंतःविषयक अपील वाला यह मोनोग्राफ किसान कथाओं, राष्ट्रवादी कथा साहित्य तथा लिंग अध्ययन के विद्वानों को रुचिकर लगेगा।

क़मर, परवीन और मैका, शिवम. (2021). भारत गंगा–यमुनी संस्कृति का उद्गम स्थल रहा है. वह संस्कृति जिसमें मानवता लोगों के मन पर हावी है. हिंसा के लिए कोई जगह नहीं है और मानवता शांति पैदा करती है. यहाँ सभी धर्मों और संस्कृतियों का सम्मान किया जाता है और विचारों को समायोजित किया जाता है. प्रेमचंद इस संस्कृति के अनमोल रत्न थे. उपन्यासकार और लघुकथाकार प्रेमचंद को बीसवीं सदी का हिंदी और उर्दू का पहला प्रमुख उपन्यासकार माना जाता है. 31 जुलाई 1880 को वाराणसी के एक गाँव लमही में जन्मे प्रेमचंद का वास्तविक नाम धनपत राय श्रीवास्तव था. वे कायस्थ परिवार से थे जो उस समय, खासकर मुगल काल में महत्वपूर्ण पदों पर रहे थे. उनके दादा गुरु सहाय खुद एक पटवारी (भूमि रिकॉर्ड कीपर) थे और चाचा महाबीर एक बड़े ज़मींदार थे. उनके पिता अजायब लाल एक डाकघर के क्लर्क थे. लेकिन पूर्वजों की पहचान से परे प्रेमचंद ने अपनी अनूठी पहचान बनाई–एक ऐसे लेखक की पहचान जिसने अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में हिंदी और उर्दू के बजाय हिंदुस्तानी भाषा को प्राथमिकता दी। यह उनकी सामासिक संस्कृति में लेखन की असाधारण शैली ही थी जिसने उन्हें हिंदी उपन्यासों का सम्राट बना दिया। हालांकि उपन्यास की दुनिया में कुछ नाम प्रेमचंद से काफी पहले भी देखने को मिले जैसे लाला श्रीनिवास दास की परीक्षा गुरु (1882), देवकी नंदन खत्री की चतिद्रकांटा संतति (1890), किशोरीलाल गोस्वामी की पत्रिका उपन्यास (1998) जिसमें उनके पैंसठ उपन्यास प्रकाशित हुए। लेकिन ये सब सामाजिक मुद्दों और यथार्थ से कोसों दूर

दंतकथाओं की तरह थे। यह प्रेमचंद की कलम ही थी जिसने सामाजिक यथार्थ को अपना विषय बनाया। उन्होंने न सिर्फ समाज को साहित्य दिया बल्कि समाज से ही पात्रों को उठाकर उनकी व्याख्या अपनी रचनाओं में की। उनकी विशिष्ट लेखन शैली ने उन्हें अलग पहचान दिलाई। उन्होंने संस्कृत–प्रभावित हिंदी या फारसीकृत उर्दू नहीं अपनाई, बल्कि हिंदी–उर्दू के संगम को अपना साथी बनाया और उस पर गर्व किया। आज हम इसे हिंदी और उर्दू की साझी विरासत मानते हैं। उन्होंने कहा था, जैसे अंग्रेजों की भाषा अंग्रेजी है, जापान की जापानी, ईरान की ईरानी, चीन की चीनी, वैसे ही भारत की राष्ट्रभाषा को भारतीय कहना न केवल उचित है बल्कि उसी वजन के साथ ऐसा करना आवश्यक है। समाज के सामान्य लोगों की समस्याओं के प्रतिबिंब के साथ उनकी विपुल लेखन शैली आम लोगों तक पहुंची। प्रेमचंद ने एक बार कहा था, हमें अपने साहित्य का स्तर ऊंचा उठाना होगा, ताकि वह समाज की अधिक उपयोगी सेवा कर सके...हमारा साहित्य जीवन के हर पहलू पर चर्चा और आकलन करेगा और हम अब अन्य भाषाओं और साहित्यों के बचे–खुचे हिस्से को खाकर संतुष्ट नहीं होंगे। हम स्वयं अपने साहित्य की पूंजी बढ़ाएंगे। उन्होंने एक मौलवी से लगभग आठ साल तक फ़ारसी का अध्ययन किया, जिनकी शिक्षा का उनके मन पर गहरा प्रभाव पड़ा, जिसके परिणामस्वरूप उनकी रचनाएँ हिंदू–मुस्लिम एकता का एक आदर्श बन गईं। बाद में 2014 में उन्होंने पाया कि हिंदी भी एक उपयोगी संचार भाषा है क्योंकि समाज का एक बड़ा हिस्सा हिंदी का उपयोग करता था।

4. अध्ययन के उद्देश्य

प्रेमचन्द जी के उपन्यासों में सामाजिक, आर्थिक, समस्याओं का अध्ययन करना।

5. शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन में प्रेमचन्द के उपन्यासों की 21वी सदी में समाज में क्या प्रासंगिकता है का अध्ययन विश्लेषणात्मक शोध प्रविधि के माध्यम से किया जाएगा। इसमें प्रेमचन्द के उपन्यास निर्मला, प्रतिज्ञा कर्मभूमि, रंगभूमि गोदान, गबन, सेवासदन, प्रेमाश्रम का गहन अध्ययन करके उसका विश्लेषण किया जायेगा।

विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किसी भी विषय की प्रासंगिक जानकारी के लिए किया जाता है। शोध करने के लिए विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किसी विषय को विश्वसयनीय बनाने के लिए, शोध का समर्थन करने के लिए उनके लिए सबूत को खोजने के लिए किया जाता हैं इसमें पहले से उपलब्ध तथ्यों या सूचनाओं का अध्ययन किया जाता है। इस विधि में पहले डेटा को एकत्र किया जाता है और जब उन सभी डेटा को एकत्र कर लिया जाता है तो शोध विषय का समर्थन करने के लिए जांच की जाती हैं इससे हमें ठोस प्रकार के साक्ष्य प्राप्त होते है। विश्लेषणात्मक शोध विधि से हम किसी भी समस्या के तह तक जा सकते हैं। इस शोध विधि ने पहले उपलब्ध डेटा से जानकारी प्राप्त करने के लिए सबसे पहले अपने विषय से सम्बन्धित जानकारी को छाँटा जाता है और ऑकड़ो को व्यवस्थित रूप में रखा जाता है। ताकि शोधकर्ता अपने विषय से सम्बन्धित एक वैध जानकारी तक पहुँच सके। प्रेमचन्द जी के आठ उपन्यासों का गहराई से विश्लेषण करके सूक्ष्म जानकारी एकत्र करूँगी और यह जानने का प्रयास करूंगी कि किस प्रकार से 21वीं सदी में आज भी उनके उपन्यास प्रासंगिक है। इस विधि से नई जानकारी हमें प्राप्त होती है। इससे विषय के विकास में हमें सहायता प्राप्त होती हैं विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग शोधकर्ता निष्कर्षों को अधिक वैधता देने के लिए करता है। इस विधि के द्वारा ही हमें यह पता चल पाता है कि किसी दावे पर क्यों विश्वास करना चाहिए। यह विधि शोधकर्ताओं के लिए बहुत ही मूल्यवान साबित होती है क्योंकि इससे शोधकर्ता को अपने शोध कार्य में वैधता प्राप्त होती है और वह एक उचित निष्कर्ष पर पहुँच पाता है। इसके द्वारा हमें ''क्यों'' और ''कैसे'' प्रश्न का उत्तर प्राप्त हो जाता है।

''विश्लेषणात्मक अनुसंधान एक संगठित और व्यवस्थित अध्ययन है जो कठिन या जटिल घटनाओं को उनके घटकों की जांच करके समझाने, समझने और विच्छेदित करने का प्रयास करता है। इसने पैटर्न की पहचान करने, सार्थक निष्कर्ष निकालने और अंतदृष्टि' प्राप्त करने के लिए डेटा, तथ्यों या जानकारी का गंभीर रूप से विश्लेषण' करना शामिल है। इसका उपयोग डेटा और साक्ष्य की कठोर परीक्षा और व्याख्या के माध्यम से समझ बढ़ाने के लिए किया जाता है।'

5.1 तथ्य संकलन के स्रोत

प्रस्तुत शोध में तथ्य संकलन के लिए मुख्य रुप से द्वितीयक स्रोत का प्रयोग किया गया है। जिसमें तथ्य संकलन के लिए विभिन्न शोध पत्रों, डेस्क वर्क, पत्र–पत्रिकाएँ, पुस्तक, लेख, आदि के माध्यमों से तथ्यों का संकलन किया गया है।

6. परिणाम एंव चर्चा

प्रेमचंद जी ने जब साहित्य लेखन करना आरंभ किया था उस समय हमारा देश पराधीन देश था। ब्रिटिश ने हमारे देश पर कब्जा कर रखा था, देश अनेक आर्थिक और सामाजिक समस्याओं का सामना कर रहा था। जगह–जगह अनेक आंदोलन हो रहे थे। प्रेमचंद अपने साहित्य लेखन के द्वारा देश की जनता को जागृत करना चाहते थे कि जनता तत्कालीन परिस्थितियों का सामना करते हुए अपने आप को कैसे उन्नत और प्रगतिशील बना सकती है। उनका मानना था कि स्वाभिमानी आत्मविश्वास और आत्मनिर्भर व्यक्ति अपने आप को किसी भी विकट समस्या से बाहर निकाल सकता है। उन्होंने अनेक उपन्यासों की रचना की और सभी उपन्यासों में उन्होंने तत्कालीन समस्या का वर्णन करते हुए उस समस्या से कैसे बाहर आना है उसका वर्णन किया है। समस्याओं का मुख्य कारण क्या है यह उनके उपन्यास पढ़ कर जनता को पता चल जाता है 21वीं सदी में भले ही हमारा देश आजाद हो फिर भी कई समस्याएं ज्यों की त्यों अपना भेष बदलकर हमारे सामने खड़ी हुई हैं। प्रेमचंद जी दूरदर्शी लेखक थे जो हर समस्या पर बारीकी से ध्यान देते थे। आज भी जब हम उनके किसी भी उपन्यास को पढ़ते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है कि जो हम उपन्यास पढ़ रहे हैं यह हमारी या हमारे आसपास घटित हो रही समस्याएं ही हैं। और हमें समस्याओं का जड़ व कारण का पता भी चलता है जिससे हम कुछ हद तक समस्याओं को सुलझा सकते हैं। हमारे देश में आज अनेक आर्थिक सामाजिक और राजनीतिक समस्याएं व्याप्त हैं। हर कोई समस्याओं से बाहर निकलने का प्रयास कर रहा है। हर घर की कोई एक कहानी और अपनी–अपनी समस्याएं हैं। यदि इन कारणों को दूर करने का प्रयास किया जाए तो वह समस्या काफी हद तक दूर हो सकती है।

6.1 21वीं सदी के संदर्भ में प्रेमचंद जी के आर्थिक विचार

हमारा देश एक विकासशील देश है। आज भी हमारा देश बहुत सारी सुविधाओं के लिए विदेशों पर निर्भर है। हमारे देश में आज भी उन्नत विज्ञान और तकनीकों की कमी है। बहुत से किसान आज भी पुराने तरीकों से अपने खेतों पर काम कर रहे हैं। कृषि में यंत्रीकरण का प्रयोग सिर्फ वह किसान कर रहे हैं जिसके पास धन हो हमारे देश में भले ही औद्योगिकरण का बढ़ावा दिया जा रहा है लेकिन फिर भी विकसित देशों की अपेक्षा बहुत कम है।

हम बहुत से सामान बनाने के लिए आज भी विकसित देशों पर निर्भर हैं। हमारे देश की जनसंख्या आज विश्व में पहले पायदान पर पहुंच गई है जिससे प्रति व्यक्ति आय अब बहुत कम हो गई है। रोजगार की समस्या बहुत अधिक है कई लोग तो अब अपने देश को छोड़कर विदेशों में नौकरी करने लगे हैं। किसी भी देश की आर्थिक स्थिति में यातायात एवं संचार व्यवस्था अहम भूमिका अदा करती है। आज भी सड़कों की स्थिति और संचार के अभियुक्त साधनों की कमी है। सामाजिक यथार्थवाद और प्रेमचंद हिंदी उपन्यास उन्नीसवीं सदी में विकास की स्थिति में था। प्रेमचंद से पहले, यह जादुई या धोखे की कहानियों, मनोरंजक कहानियों और धार्मिक विषयों के इर्द–गिर्द घूमता था। इस प्रकार, उनके सामने हिंदी उपन्यासकार उपन्यास के सटीक उद्देश्य को पूरा नहीं कर सके क्योंकि वे या तो केवल उपदेशात्मक थे या केवल उपदेशात्मक तत्व का अभाव था। वे दोनों को संतोषजनक ढंग से मिश्रण करने में विफल रहे और यहां तक कि पश्चिम में उपन्यास के विकास से लाभ नहीं उठा सके। प्रेमचंद पहली बार उपन्यास के रूप और उद्देश्य को समझते हैं और इस पश्चिमी रूप में भारतीय विषयों, मुद्दों और विश्वदृष्टि के साथ आदर्शवाद और यथार्थवाद का मिश्रण करते हैं। वह न केवल अपने मूल्यवान योगदान से इसे समृद्ध करता है बल्कि साहित्यिक रूप को एक विशिष्ट दिशा और विकास प्रदान करता है। इस प्रकार, उन्हें हिंदी उपन्यास और प्रगतिशील आंदोलन के क्षेत्र में सबसे प्रतिष्ठित व्यक्तियों में से एक माना जाता है। प्रीप्रमचंद युग और प्रेमचंद युग के रूप में हिंदी उपन्यासों का सीमांकन न केवल कालानुक्रमिक रूप से आधारित है बल्कि इन विशिष्ट साहित्यिक विशेषताओं पर आधारित है। इसी तरह प्रेमचंद की उम्र और प्रेमचंद की उम्र भी साहित्य की दो अलग–अलग धाराओं का प्रतिनिधित्व करती है। इस प्रकार, उनकी पूर्ववर्ती और सफल आयु के बीच का स्थान हिंदी साहित्य के लिए विशिष्ट मानकों को दर्शाता है। भारत में, मुंशी प्रेमचंद यूरोपीय शैली की लघु कथाएँ लिखने वाले पहले उर्दू लेखक थे। उनका मानना था कि सौंदर्य के मानकों को बदलने की जरूरत है, साहित्य को सामाजिक सुधार का एक साधन होना चाहिए, और ग्रामीण और शहरी गरीबी, महिलाओं के उत्पीड़न और जाति व्यवस्था जैसी सामाजिक यथार्थ की समस्याओं का पता लगाना चाहिए। आनंद का यथार्थवाद भारतीय उपन्यास की तकनीक में भी एक नवीनता है, क्योंकि यह भारतीय उपन्यास को आगे बढ़ाता है जहाँ से प्रेमचंद ने इसे छोड़ा था। यह प्रेमचंद ही हैं, जिन्होंने भारतीय उपन्यास में पहली बार अपने उपन्यासों के नायक के रूप में किसानों और दलित लोगों का चयन किया। यहां तक कि वह भारतीय समाज में वर्ग और जाति के विरोध को भी देखता है और साम्राज्यवादियों, सामंतों और पूंजीपतियों द्वारा गरीबों के शोषण का सफलतापूर्वक वर्णन करता है। हालाँकि, वह सामंती समाज से भारत में उद्योगवाद के परिवर्तन के ऐतिहासिक महत्व को समझने में असमर्थ है। इसलिए वह मानव प्रयासों में कट्टरवाद के बजाय सामाजिक विकास में विश्वास करता है। मुल्क राज आनंद ने भारतीय उपन्यास पर अपने क्रांतिकारी और मानवतावादी दृष्टिकोण को जीवन की सामाजिक चेतना और प्रेमचंद के उपन्यासों में जीवन की यथार्थवादी उपचार और रबींद्रनाथ टैगोर के कलात्मक परिप्रेक्ष्य में जीवन के यथार्थवादी उपचार को जोड़कर विस्तार किया है। आनंद का यथार्थवाद इस प्रकार प्राप्त संश्लेषण पर आधारित है। प्रेमचंद का मानना है कि कविता और साहित्य का उद्देश्य हमारी अनुभूतियों को और प्रगाढ़ करना हैय लेकिन मानव जीवन विपरीत लिंग के प्रेम तक सीमित नहीं है। वह सवाल करता हैरू क्या साहित्य जो जीवन की कठोर वास्तविकताओं से भागने के लिए महत्वपूर्ण मानता है, विचारधारा और अभिव्यक्तियों से संबंधित हमारी आवश्यकताओं को पूरा कर सकता है? शृंगारिक स्वभाव जीवन के कुछ हिस्सों में से एक है। यह न तो गर्व की बात के रूप में कार्य करता है और न ही अच्छे स्वाद का उदाहरण अगर किसी विशेष जाति के साहित्य का अधिकांश हिस्सा इसके साथ जुड़े।

6.2 प्रगति और क्रान्ति

प्रेमचन्द के अधिकांश उपन्यासों पर गांधीवाद का प्रभाव है। द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद और मार्क्स के अन्य सिद्धान्तों का प्रत्यक्ष प्रभाव उनमें नगण्य है। इन कारणों से प्रेमचन्द को प्रगतिवादी या क्रान्तिकारी कलाकार मानने में आपत्ति हो सकती है। लेकिन 'प्रगतिवाद' के विशाल अर्थ को लें तो वे प्रगतिवादी ही है। जिस लेखक की कृतियों में भारतीय समाज की प्रत्येक श्रेणी के लोगों का चित्रण, उनकी प्रतिदिन की समस्याओं का प्रतिपादन, उनकी बलहीनताओं और सद्भावनाओं का प्रदर्शन, भारतीय संस्कृति का सही–सही मूल्यांकन और समाज को उसकी असंगतियों से बचाकर स्वस्थ और गतिशील बनाने का सन्देश उपलब्ध है, उसे प्रगतिशील मानने में कया आपत्ति हो सकती है? अगर समाज की विकासोन्मुख प्रवृत्तियों का दिग्दर्शन ही प्रगतिशीलता का लक्षण है तो प्रेमचन्द का गांधीवाद प्रगतिशीलता है, क्योंकि प्रेमचन्द के उपन्यासों के समय में हमारे राष्ट्र में सबसे बड़ी प्रेरक शक्ति गांधीवाद की थी। उसकी उपेक्षा करते तो प्रेमचन्द भारतीय समाज के विश्वस्त चित्रकार न होते।

7. निष्कर्ष

प्रेमचन्द का धर्म सम्बन्धी दृष्टिकोण आंतिकारी था। समाज में व्याप्त धार्मिक मान्यताओं पर प्रहार किया है। धर्म के कारण ही जातिभेद तथा ऊँच–नीच की भावना उपस्थित होती है। दीन–दुखियों की सेवा करके मानव–धर्मी का समर्थन किया है। प्रेमचन्द आध्यात्मिक दृष्टि से नास्तिक थे। उन्होंने धार्मिक आडम्बरों का विरोध किया है। मनुष्य जो मधुर स्वप्न लोक में विचरण करता है, वह अनेक इच्छा, आकांक्षा एवं महत्वकांक्षा को पूरी करने के लिए करता है। अपनी कल्पना एव ं स्वप्न को साकार करने के लिए प्रयत्न करता है परन्तु उसका स्वप्न साकार नही ं होता तब हताशा हो जाता है। ग्रामीण किसान सतत् श्रम करके निर्जीवसा बन जाते है। प्रेमचंद के उपन्यास, जाहिर तौर पर इस दमनकारी व्यवस्था के खिलाफ प्रतिरोध की भावना को बढ़ावा देते हैं। गांधीवादी काल के सामाजिक–राजनीतिक सह आर्थिक मुद्दों को भी कर्मभूमि के भीतर निपटाया जाता है। अमरकांत पर गाँधीवाद के प्रभाव को उपन्यास में सूत कताई की अपनी क्रिया के माध्यम से स्पष्ट रू से देखा जा सकता है जो गांधीवादी स्वराज का कार्डिनल सिद्धांत था। उपन्यास के अंत में, अमरकांत को हिंसक कार्रवाई और व्यवहार की निरर्थकता का एहसास होता है। उसे इतने लोगों की हत्या पर पछतावा है। इस तरह, अमरकंटक के पश्चाताप ने उन्हें क्रांति और गांधीवाद की कठोर प्रकृति के बीच पकड़ा। दूसरी ओर, इस उपन्यास को एक राजनीतिक उपन्यास के रूप में पढ़ा जा सकता है, जो अमीर और जमींदारों, उद्योगपतियों और उच्च वर्ग द्वारा समर्थित ब्रिटिश शासन के खिलाफ लोगों के संघर्ष को प्रस्तुत करता है। सामाजिक परिवर्तन और बौद्धिक किण्वन की प्रवृत्ति और प्रेमचंद से लेकर अमिरत लाल नागर और फनिश्वर नाथ रेणु तक एक परिवर्तन विकासवादी रहा है। वे सभी किसी भी विशिष्ट संप्रदाय दर्शन में विश्वास नहीं करते हैं क्योंकि उनका मानवीय मूल्यों में दृढ़ विश्वास है। इन उपन्यासकारों के कार्यों की एक विशिष्ट विशेषता यह है कि उनकी साहित्यिक प्रतिभा का विकास कंक्रीट से अमूर्त और वास्तविक से आदर्श तक एक चिह्नित आंदोलन को दर्शाता है। प्रेमचंद का अंतिम उपन्यास गोदान (1936) अपने पहले के कार्यों से एक गरीब किसान के जीवन को अलग तरीके

से पेश करता है। समय बीतने के साथ, प्रेमचंद मनी लेंडिंग सिस्टम के बुरे परिणामों के बारे में पूरी तरह से सचेत हो गए थे। दूसरी ओर, उपन्यास उस समय आया जब भारतीय समाज सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संकटों से गुजर रहा था। इस निर्णायक मोड़ पर, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में लगे हुए थे। इसलिए, गोदान, एक सामाजिक दस्तावेज है, जो भारतीय किसानों की आर्थिक स्थितियों को वास्तविक रूप से दर्ज करता है। होरी, नायक, एक किसान है जो सिस्टम के खिलाफ आवाज उठाने में सक्षम नहीं है और जीवन भर पीड़ित है। वह धर्म के झूठे विचारों में फंस गया है और इसीलिए वह धन उधारदाताओं द्वारा शोषण का विरोध करने में सक्षम नहीं है। वह एक कट्टर चरित्र है जो भारतीय किसानों के अनिवार्य लक्षणों का प्रतिनिधित्व करता है। होरी किसान का प्रतिनिधित्व करता है जिसका जमींदारों और साहूकारों जैसे संपन्न लोगों द्वारा शोषण किया गया है। होरी खुद को उसी उपन्यास में चित्रित करता है।

8. सन्दर्भ

1. डॉ. युगेश्वर, (1976) प्रेमचन्द समग्र, सम्पादक हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन, वाराणसी।
2. यादव चित्रा (2019), मुंशी प्रेमचन्द्र का हिन्दी साहित्य मे योगदान– एक समीक्षा, जर्नल ऑफ एडवांस एंड स्कॉलरली रिसर्च इन एलाइड एजुकेशन, वॉल्यूमः 16, अंकः 5
3. देवी, बाला (2018), हिन्दी उपन्यास और भारतीय समाज का मध्यवर्ग, जर्नल ऑफ़ एडवांस एंड स्कॉलरली रिसर्च इन एलाइड एजुकेशन, खंडः14, अंकः 2, ई
4. प्रो. चन्द्रवंशी डी.पी. (2015), "हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचन्द्र का योगदान" रिसर्च जर्नल ऑफ़ ह्यूमेनिटीज़ एंड सोशल साइंसेस।
5. गुरुचैन सिंह (2007), दि न्यू मिडल क्लास इन इंडियाः ए बायोग्राफिकल एनालिसिस, रावत पब्लिकेशन, पृ. 19, जयपुर
6. लाल बहादुर वर्मा (1998), यूरोप का इतिहास, खंड –1, प्रकाशन संस्थान।
7. दास श्यामसुंदर (1982), भारतीय मध्यवर्ग, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना, पृ . 58
8. संजय जोशी, फ्रैक्चर्ड मार्डनिटी, ओ यू पी, 2001, पृ. 5
9. के., जयलक्ष्मी. (2016). समाज सुधारक प्रेमचंद – एक समीक्षा. 20. 44–46.
10. सिंह, शैलेंद्र। (2022)। प्रतिरोध और अनुरूपता के बीचः औपनिवेशिक उत्तर भारत में प्रेमचंद का उपन्यास (आकार बुक्स, 2022; दक्षिण एशियाई संस्करण)।
11. राठौड़, जसवंत. (2022). आवाज़हीनों की आवाज़ः मुंशी प्रेमचंद के चुनिंदा उपन्यासों में सबाल्टर्न का अध्ययन.
12. क़मर, परवीन और मैका, शिवम. (2021). प्रेमचंदः साझा संस्कृति के विपुल लेखक. ैत्छ इलेक्ट्रॉनिक जर्नल. 8. 146–149.
13. सिंह, शैलेंद्र. (2020). औपनिवेशिक उत्तर भारत में नारीत्व के प्रेमचंद के बदलते चित्रणः अनुरूपता और प्रतिरोध के बीच. भारतीय समाजशास्त्र में योगदान. 54. 414–439. 10..
14. कुमार, डॉ. (2022). संरचनात्मक हिंसाः मुंशी प्रेमचंद की निर्मला में उत्पीड़न का एक उपकरण। क्रिएटिव लॉन्चर। 5. 69–76.
15. गुप्ता, प्रकाश चंद्र (1998)। प्रेम चंद . भारतीय साहित्य के निर्माता. साहित्य अकादमी, नई दिल्ली ।
16. सिगी, रेखा (2006)। मुंशी प्रेमचंद . एएचडब्ल्यू समीर श्रृंखला, हीरा प्रकाशन, नई दिल्ली ।
17. राय, अमृत (1991)। प्रेमचंदः उनका जीवन और समय, त्रिवेदी, हरीश द्वारा अनुवादित, ऑक्सफोर्ड यूनिवरसिटि प्रेस नई दिल्ली ।
18. नारायण, गोविंद (1999)। प्रेमचंद, उपन्यासकार और विचारक, प्रगति प्रकाशन, नई दिल्ली ।
19. नरवणे, विश्वनाथ एस. (1980) प्रेमचंद, उनका जीवन और कार्य, विकास प्रकाशन, नई दिल्ली ।
20. गाएं, आर.एस.(1977) भारतीय उपन्यास एक महत्वपूर्ण अध्ययन, अर्नाल्ड–हीनमैन प्रकाशन, नई दिल्ली ।
21. सिंह, अवधेश के (1993) समकालीन भारतीय कथा, क्रिएटिव बुक्स, नई दिल्ली ।

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.